Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A Semester – III
Phil. CC – 11
Western Analytical Philosophy

Notes / 1

L. Wittgenstein: "Picture theory of meaning." (चित्र सिद्धान्त)

GRB BOOKS

विटगेंस्टाइन बहुत प्रतिभाशाली दार्शनिक चिन्तक था। इनकी दृष्टि में दर्शन का मुख्य कार्य दार्शनिक विधि से चिन्तन करना है इसलिए इसने दार्शनिक प्रविधि पर अधिक बल दिया है। इनके अनुसार दार्शनिक प्रविधि का महत्व दार्शनिक प्रणाली से अधिक है। विटगेंस्टाइन के अनुसार सम्पूर्ण दर्शन भाषा की विवेचना है। भाषा प्रतिज्ञप्तियों का संकलन है। प्रतिज्ञप्ति भाव व्यक्त करता है प्रतिज्ञप्ति के दो ही रूप हो सकते हैं सत्य या असत्य। प्रतिज्ञप्ति 'खड़िया सफेद है', तभी सत्य कहेंगे अथवा जब खड़िया के सफेद होने का हमको अनुभव हो।

इसका तात्पर्य यह है कि सभी प्रतिज्ञप्तियों का विश्लेषण करके इनको सरल प्रतिज्ञप्तियों में परिणित किया जा सकता है। ये सरल प्रतिज्ञप्तियाँ किसी आणविक तथ्य का चित्र उपस्थित करती है। ये तथ्य हमारे अनुभव जगत के ही होते हैं। इसलिए प्रतिज्ञप्ति अन्ततोगत्वा अनुभूत तथ्यों का चित्रण करते हैं। जो प्रतिज्ञप्तियाँ अनुभूत तथ्यों का चित्रण नहीं करती वे प्रतिज्ञप्तियाँ ही नहीं हैं। (ये हैं) मिथ्या

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

प्रतिज्ञप्ति कहा जा सकता है। ऐसा कहने का आशय नहीं है कि प्रतिज्ञप्तियाँ सदा जगत में घटने वाले तथ्यों को अनुभव करती हैं। यदि ऐसा हो तो कोई असत्य प्रतिज्ञप्ति ही न होगी। प्रतिज्ञप्ति सत्य और असत्य दोनों ही हो सकती है। असत्य प्रतिज्ञप्ति भी सम्भावित तथ्यों की अभिव्यक्ति है। ऐसे सम्भावित तथ्य भी अनुभव सम्भव हो सकते हैं। जिन प्रतिज्ञप्तियों का इन्द्रिय-परीक्षण नहीं हो सकता है वे निरर्थक हैं। सत्य प्रतिज्ञप्तियाँ तथ्यों के अनुरूप होती हैं और असत्य प्रतिज्ञप्ति तथ्य के विपरीत होती है। तथ्य किसी सीमा में अनुभव योग्य होता है। अर्थात प्रतिज्ञप्ति का आधार इसके प्रमाणीकरण की विधि है। प्रतिज्ञप्तियों की सार्थकता के लिए यह आवश्यक है कि वे अनुभवगत तथ्यों से प्रमाणित न किये जा सके। यदि इन्हें प्रमाणित करना सम्भव न हो तो इन्हें प्रतिज्ञप्ति ही न समझना चाहिए।

ट्रैक्टेटस में विट्गेंस्टाइन ने अपने "चित्र-सिद्धान्त (Picture theory) का उल्लेख किया है। एकबार पेरिस के न्यायालय में एक मोटर कार की दुर्घटना कार का खिलौना बनाकर चित्रित की गई थी। इसी उदाहरण से विट्गेंस्टाइन ने चित्र-सिद्धान्त निर्मित कर लिया।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

उसने सोचा कि प्रतिज्ञप्ति संसार में प्रयोगात्मक रूप में रख दी जाती है। चित्र में तत्व इस प्रकार संगठित होते हैं जिस वस्तुओं में उसके होने की सम्भावना होती है। यद्यपि चित्र में खिलौना और गुड़िया नहीं होते किन्तु उसके तत्व उसी प्रकार काम में आते हैं जैसे खिलौना और गुड़िया होते हैं। विटगेन्सटाइन को इस सिद्धान्त की प्रेरणा हर्ट्ज से भी मिली थी। इनका विचार था कि हमारे विचारों और प्रकृति में कुछ समरूपता अवश्य होनी चाहिए।

प्रतिज्ञप्तीय चिह्न एक प्रकार के चित्र हैं, किन्तु केवल प्रतिज्ञप्ति चिह्नों को एक ही चित्र नहीं समझना चाहिए। यदि चित्र आते हैं तो प्रतीज्ञप्तीय चिह्नों को एक ही चित्र नहीं समझना चाहिए। यदि चित्र आते हैं तो प्रतीज्ञप्तीय चिह्न स्पीज हैं। ग्रामोफोन के रेकार्ड और संगीत की लय भी चित्र हैं। शब्दों के परिधि से बाहर की चीजें भी चित्र हो सकती हैं, जैसे विचार भी चित्र हैं। चित्र किसी तथ्य का चित्रण करते हैं। चित्र स्वयं भी एक तथ्य है। विचार मानस तत्वों से निर्मित मानसिक चित्र हैं। वह स्पष्टतः प्रतिज्ञप्तीय चिह्न से भिन्न दिखाई देता है। विचार - चित्र सुश्लिष्ट होते हैं उनके संघटक क्या हैं —

यह तो विटगेन्सटाइन नहीं बता सका। किन्तु उसने यह अवश्य बताया कि विचार के संघटक शब्दों के अनुरूप

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS   *Notes*

होते हैं। संघटकों का स्वरूप निर्धारित करना मनोविज्ञान का कार्य है।

चित्र भी वैसे ही तथ्य हैं जैसे तथ्यों को वे चित्रित करते हैं। क्योंकि चित्रों में कुछ तत्व विशेष प्रकार से संगठित होते हैं। जिस विशेष प्रकार से उसके तत्व संगठित होते हैं उसे चित्र की संरचना (picture's structure) कहते हैं, और इसकी संरचना की सम्भावना इसका आकार है। चित्रित तथ्यों के आकार को विटगेंस्टाइन 'चित्राकार' (Pictorial form) कहते हैं। चित्र और तथ्य में समरूपता होती है, तभी तो चित्र किसी तथ्य का चित्रण कर पाता है। स्थानिक चित्र किसी स्थान का चित्रण करता है, रंगीन चित्र रंगीन तथ्य का चित्रण करता है आदि आदि।

है कि चित्र अपना चित्राकार चित्रित नहीं कर सकता है। वह केवल इसे प्रदर्शित कर सकता है। वह केवल इसे प्रदर्शित कर सकता है। चित्राकार तभी निर्मित होता है जब नाम प्रतिनिधित्व वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। तात्पर्य यह है कि विटगेंस्टाइन के अनुसार चित्र और तथ्य के बीच कुछ न कुछ समरूपता होती है वही चित्राकार है। चित्र को अर्थ प्रदान करने के लिए चित्र में है। इसे प्रतीक में देते हैं। इसी प्रकार दिखाया

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

जाना चाहिए। जिस प्रकार यथार्थता में वस्तु दिखाई जाती है। इसी कारण चित्र भी संघटक तत्व भी आकार के होने चाहिए जिस आकार को चित्रित तथ्य के तत्व होते हैं। अतः इसमें संरचना की वही सम्भावना होनी चाहिए।

विट्गेंस्टाइन ने चित्रकार की तुलना प्रतिनिधित्व आकार और तर्कीय आकार से की है। चित्रकार और प्रतिनिधि आकार में स्पष्ट भेद है। चित्र अपनी वस्तु का प्रतिनिधित्व उसके बाहरी ओर से करता है और इसका प्रतिनिधित्व आकार ही उसका दृष्टिकोण होता है। किसी चित्रण में कोई न कोई दृष्टिकोण अपनाया जाता है। एक स्थिति के भिन्न दृष्टिकोणों से भिन्न चित्र हो सकते हैं। दृष्टिकोण स्वच्छन्द होता है। किन्तु चित्रकार स्वच्छन्द नहीं होता है। यही चित्रकार और प्रतिनिधि आकार में अन्तर है। प्रतिनिधि आकार के कारण कोई चित्र सत्य या असत्य होता है। चित्र को सत्य या असत्य कहने के लिए कोई दृष्टिकोण चुनना पड़ता है और चित्र के तत्वों का सम्बन्ध वस्तु के तत्वों से जोड़ना पड़ता है। अतः यह भी कहा जा सकता है कि चित्र के चित्रकार का सम्बन्ध अर्थ से और प्रतिनिधि आकार का सम्बन्ध सत्य और मिथ्या से होता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

तर्कीय आकार की

विटगेंस्टाइन सीत का आकार कहता है। इसमें और चित्रकार में कोई भी अन्तर नहीं है। तथ्य और उसके चित्र में कुछ समानता होनी चाहिए। उसी को तर्कीय आकार कहते हैं। संरचना में अन्तर होने के लिए भी विटगेंस्टाइन जो तर्कीय आकार कहता है। चित्र में तर्कीय जैसा का तैसा नहीं मिलता। चित्र में तथ्य उसका आकार मिलता है, वरन और तर्काकार एक ही होने के कारण चित्रकार चित्रों को तर्कीय चित्र कह सकते हैं। तर्कीय चित्र संसार का चित्रण कर सकते हैं। तत्त्व के आकार को जैसा प्रतिबिम्ब का आकार हमें अपेक्षित नहीं है। आकार ही पर्याप्त है। तर्कीय चित्र का यही चित्र सिद्धान्त है। इस प्रकार विटगेंस्टाइन है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS